'निपुणिका' बाणभट्ट की आत्मकथा का सर्वाधिक प्रभावित करने वाला स्त्री पात्र है। उपन्यास के प्रारंभिक पृष्ठों में ही निपुणिका का परिचय मिल जाता है। वह एक अस्पृश्य जाति की कन्या थी जिसका विवाह उस कांदविक वैश्य के साथ हुआ था जो भड़भूजे से सेठ बना था। विवाह के एक वर्ष के भीतर ही वह विधवा हो गई और ससुराल में मिले दुखों को न झेल पाने के कारण घर छोड़कर भाग आई। बाण से उसकी भेंट उज्जयिनी में हुई जहाँ वह एक नाटक मंडली का सूत्रधार था। निपुणिका ने नाटक मंडली में भर्ती होने की इच्छा प्रकट की और बाण ने स्वीकृति दे दी।

निपुणिका के रूपरंग और सौंदर्य के विषय में बाण अपना मंतव्य इन शब्दों में व्यक्त करता है–**"निपुणिका बहुत अधिक सुंदर नहीं थी। उसका रंग अवश्य शेफालिका के कुसुमनाल के रंग से मिलता था, परंतु उसकी सबसे बड़ी चारुता-संपत्ति उसकी आँखें और अंगुलियाँ ही थीं। अंगुलियों को मैं बहुत महत्त्वपूर्ण सौंदर्योपादान समझता हूँ।"**

निपुणिका कुशल अभिनेत्री है। एक बार उज्जयिनी में बाणभट्ट की नाटक मंडली ने परम भट्टारक की उपस्थिति में नाट्य अभिनय किया। निपुणिका ने उस रात ऐसा जीवंत अभिनय किया कि बाण विस्मय विमुग्ध हो गया। उसने निपुणिका को बधाई देने के लिए आवाज दी और उसे देखकर हँस पड़ा। पता नहीं, निपुणिका ने इस हँसी में अपनी उपेक्षा की गंध कहाँ से पाली, वह उसकी नाटक मंडली को छोड़कर चली गई। वस्तुत: निपुणिका बाणभट्ट को मन ही मन अपने हृदय मंदिर का देवता मानने लगी थी। पुरुष की उपेक्षा नारी जीवन की सबसे बड़ी पराजय होती है। निपुणिका उसी रात नाटक मंडली छोड़कर चली गई। बाण ने उसे खोजने का बहुत प्रयास किया पर खोज न सका। बाण ने नाटक मंडली भंग कर दी और प्रतिज्ञा की कि जब तक निपुणिका को खोज नहीं लेता तब तक न कोई नाटक लिखूँगा, न खेलूँगा। छह वर्ष के उपरांत निपुणिका की भेंट स्थाणीश्वर में बाणभट्ट से होती है। यहाँ वह पान की दुकान करती है। बाण उसे देखकर आश्चर्यचकित रह गया और उसकी दुखभरी कथा सुनने के लिए उसी के पास ठहर गया। यहीं निपुणिका ने भट्टिनी की विपत्ति कथा से बाण को अवगत कराया और छोटा राजकुल से उसकी मुक्ति के लिए सहायता की प्रार्थना की।

Scanned by CamScanner

टास्क निपुणिका की त्यागवृत्ति को स्पष्ट उदाहरण देकर समझाइए।

निपुणिका में अनेक गुण थे। जिन्हें देखकर बाण विस्मय विमुग्ध था। वह सोचता था कि जिस स्त्री में इतने गुण हों वह समाज के लिए तो पूजनीय ही है। वह हँसमुख, अभिनय कुशल, साहसी एवं आत्मविश्वासी थी। उसमें त्यागवृत्ति एवं सहनशीलता भी पर्याप्त मात्रा में है। वह इतनी साहसी है कि अंतःपुर से भट्टिनी को मुक्त कराने हेतु बाण की सहायता लेती है और इस कार्य को सफलतापूर्वक संपन्न भी करती है। उसकी त्यागवृत्ति का उत्कृष्ट उदाहरण वह दृश्य है जब वह और भट्टिनी दोनों गंगा में डूब रही थीं तब वह बाणभट्ट से कहती है–**"मुझे छोड़ो, भट्टिनी को संभालो।"** मृत्यु मुख में पड़े व्यक्ति से ऐसे त्याग की अपेक्षा निश्चय ही अनुकरणीय है।

निपुणिका अपने मन की व्यथा बाण के सम्मुख तब व्यक्त करती है जब वह छह वर्ष उपरांत स्थाणीश्वर में उससे मिलता है। वह कहती है–**"हां भट्ट, मेरे भाग आने का कारण तुम्हीं हो, परंतु दोष तुम्हारा नहीं है, दोष मेरा ही है। तुम्हारे ऊपर मुझे मोह था। उस अभिनय की रात को मुझे एक क्षण के लिए ऐसा लगा था कि मेरी जीत होने वाली है, परंतु दूसरे ही क्षण तुमने मेरी आशा को चूर कर दिया। निर्दयी, तुमने बहुत बार बताया था कि तुम नारी देह को देव मंदिर के समान पवित्र मानते हो, पर एक बार भी तुमने समझा होता कि वह मंदिर हाड़-माँस का है, ईंट-पत्थर का नहीं।"**

स्व-मूल्यांकन (Self-Assessment)

निम्नलिखित कथनों में सत्य अथवा असत्य की पहचान करें

(State Whether the following statements are True or False) :

7. बाणभट्ट, भट्टिनी को गंगा के समान पवित्र मानता है।
8. निपुणिका एक अस्पृश्य जाति की कन्या नहीं थी।
9. सोलह वर्ष की आयु में निपुणिका विधवा हो गई थी।

किंतु अब निपुणिका का वासनामय प्रेम भक्ति में बदल चुका था। वह बाणभट्ट को अपना गुरु मानती है जिसने उसे स्त्री धर्म सिखाया है।

निपुणिका बाण से प्रेम करती है। उसके प्रति आदर एवं श्रद्धा का भाव भी रखती है। वह संसार की चिंता नहीं करती। वह यह कदापि सहन नहीं कर सकती कि भट्ट पर कोई लांछन लगाए। वह कहती है–**"भट्ट तुम मेरे गुरु हो, तुमने मुझे स्त्री धर्म सिखाया है।"** वह बाण को संबोधित करती हुई कहती है–**"भट्ट मैंने तुम्हारा नाम कलंकित किया था, पर तुमने मेरा मान रख लिया। मैंने उस अभागी रात के समस्त क्षोभ को धो दिया। मैं उसी दिन से अपने को हाड़-माँस की गठरी से अधिक समझने लगी। तुमने मुझे मुक्ति दी है भट्ट।"**

निपुणिका का संपूर्ण जीवन उसके अदम्य साहस एवं जीवट का परिचायक है। सोलह वर्ष की विधवा घर से भागकर जब जीवन-यापन के लिए संघर्ष करती है, तो निश्चय ही अपने सतीत्व की रक्षा करना उसके लिए अत्यंत दुष्कर रहा होगा। उस विलास प्रधान समाज में जहाँ नारी पर पुरुष भेड़ियों की तरह टूटते हों, निपुणिका जैसी साहसी स्त्री ही अपने सतीत्व की रक्षा कर सकती थी। यही नहीं जब उसे भट्टिनी की विपत्ति का पता चलता है तो वह उसके उद्धार के लिए प्राण-पण से जुट जाती है। बाण को अपना सहायक बनाकर वह इसे पूर्णता तक पहुँचाती है। वह बाण से कहती है–**"तुम न आते तो भी मुझे तो यह करना ही था। बोलो भट्ट, तुम यह काम कर सकोगे? तुम असुर गृह में आबद्ध लक्ष्मी का उद्धार कर सकते हो? मदिरा के पंक में डूबी कामधेनु को उबारना चाहते हो? बोलो, अभी मुझे जाना है?"**

इन पंक्तियों में उसका संकल्प, आत्मविश्वास, साहस, उत्साह, करुणा, धैर्य जैसे भाव अभिव्यक्त हो रहे हैं। निपुणिका

Scanned by CamScanner

नोट

जानती है कि भट्टिनी भी बाण से प्रेम करती है पर उसके प्रति कभी ईर्ष्या और असूया भाव उसके मन में जाग्रत नहीं हुआ। द्विवेदी जी ने स्वयं निपुणिका से इस सत्य का उद्घाटन इन शब्दों में करवाया है–**"प्रेम एक और अविभाज्य है। उसे केवल ईर्ष्या और असूया ही विभाजित करके छोटा कर देते हैं।"**

निपुणिका बाण के प्रति पूर्ण समर्पित प्रेमिका है। वह हर हाल में बाण की उन्नति चाहती है। वह कहती है–**"भट्ट, मुझे किसी बात का पछतावा नहीं है। मैं जो हूँ, उसके सिवा और कुछ हो ही नहीं सकती थी, परंतु तुम जो कुछ हो, उससे कहीं श्रेष्ठ हो सकते हो।"**

निपुणिका कुशल अभिनेत्री है। नृत्य-संगीत में पारंगत निपुणिका का अभिनय कुशलता का परिचय रत्नावली नाटिका में 'वासवदत्ता' का अभिनय करते समय मिलता है। बाणभट्ट उसकी प्रशंसा करता हुआ कहता है–**"वासवदत्ता की भूमिका में निपुणिका ने उन्माद बरसा दिया। उसके हर्ष, शोक और प्रेम के अभिनय में वास्तविकता थी। अंतिम दृश्य में जब वह रत्नावली का हाथ मेरे हाथ में देने लगी तो सचमुच विचलित हो गई। उसके शरीर की एक-एक शिरा शिथिल हो गई। भरत वाक्य समाप्त होते-होते वह धरती पर लोट गई। नागरजन जब साधु-साधु की आनंद ध्वनि से दिगंतर कंपा रहे थे उस समय यवनिका के अंतराल में निपुणिका के प्राण निकल रहे थे।"**

निश्चय ही निपुणिका नारी जाति का शृंगार है, सतीत्व की प्रतिमा है एवं करुणा की साक्षात् प्रतिमूर्ति है। अभिनय, कुशल निउनिया, अपने अद्भुत साहस, धैर्य, त्याग, प्रेम से प्रत्येक पाठक का मन मोह लेती है। वह आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की कल्पना से उद्भुत एक अद्भुत चरित्र है।

Scanned by CamScanner